समस्याओं और प्राथमिकताओं की ओर ध्यान दिलाना (1 तीमुथियुस 6:3-21)

''पर सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है'' (1 तीमुथियुस 6:6)।

तीमुथियुस के नाम अपनी पहली पत्री को बन्द करते हुए पौलुस लोगों की मिली जुली शिक्षाओं, सांसारिक धन के प्रति दृष्टिकोण, और प्राथमिकताओं से दुखी था। उसने तीमुथियुस को झूठे शिक्षकों से सावधान रहने की चेतावनी दी (6:3-5) और उसे याद दिलाया कि धन से अधिक महत्व भक्ति का है (6:6-11क)। उसने तीमुथियुस (6:11ख-16) और धनवानों को (6:17-19) सलाह दी और अन्त में विश्वास में अपने प्रिय पुत्र से बिनती करते हुए पत्र लिखना बंद किया (6:20, 21)।

पाठ 18: झूठे शिक्षक का चित्रण (6:3-5)

6:3-5 में पौलुस ने तीमुथियुस से झूठे शिक्षक का वर्णन किया। झूठा शिक्षक वही है जो ''और ही प्रकार का उपदेश ... और खरी[1] बातों को अर्थात हमारे प्रभु यीशु मसीह की बातों को और उस उपदेश को नहीं मानता, जो भक्ति के अनुसार है[2]'' (6:3)।

उसके दोष (आयत 4क)

गड़बड़ करने वाले में तीन बातें होती हैं:

''वह धोखे में है।''[3] ऐसे व्यक्ति के काम गुस्ताख व मूर्खतापूर्ण होने पर हमें हैरान नहीं होना चाहिए। वह इस तथ्य से अनजान है कि वह धोखे में है! प्रेरितों 12:21-23 में इसका एक अच्छा उदाहरण मिलता है:

> और ठहराए हुए दिन हेरोदेस राजवस्त्र पहिनकर सिंहासन पर बैठा और उन को व्याज़्यान देने लगा। और लोग पुकार उठे, कि यह तो मनुष्य का नहीं परमेश्वर का शज़्द है। उसी क्षण प्रभु के एक स्वर्गदूत ने तुरन्त उसे मारा, ज़्योंकि उसने परमेश्वर की महिमा न की और वह कीड़े पड़के मर गया।

वह ''कुछ नहीं जानता।'' पौलुस ने ''समझ'' या ''ज्ञान'' के साथ ''कुछ नहीं'' शज़्द भी जोड़ा। सच्चाई को न मानने वाले भ्रमित व्यज़्ति का कितना सुन्दर चित्र खींचा गया है! यह व्यज़्ति अपने सामने आए सवाल पर विचार नहीं करेगा या उस ठोस तर्क की ओर ध्यान नहीं देगा जिससे उसकी समझ अपनी विकृत सोच के अलावा वह जोश से भरा, हठी और दृढ़ इरादे वाला भी होता है जैसे कि सच्चाई और ज्ञान देने वाला वही हो। 1 तीमुथियुस 1:7 में ऐसे लोगों का वर्णन ''व्यवस्थापक तो होना चाहते हैं, पर जो बातें कहते और जिनको दृढ़ता से बोलते हैं, उनको समझते भी नहीं'' के रूप में किया गया है। ऐसे लोगों के बारे में पौलुस ने कहा, ''हे भाइयो, मेरे मन की अभिलाषा और उन के लिए परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है, कि वे उद्धार पाएं। ज़्योंकि मैं उनकी गवाही देता हूं, कि उनको परमेश्वर के लिए धुन रहती है, परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं'' (रोमियों 10:1, 2)।

उसे ''विवाद और शज़्दों पर तर्क करने का रोग'' लगा लगता है। कोई विवाद को इसलिए बढ़ावा दे सकता है ज़्योंकि वह ''रोगी''[4] है। उसका रोगी मन ''प्रश्नों और झगड़ों'' (KJV) का बहाना ढूंढ़ता रहता है। उसके प्रयास का, ''शज़्दों के झगड़ों'' के रूप में दुखद अंत हो जाता है।[5] ऐसी चर्चा से सच्चाई के खोजी को कुछ हासिल नहीं होता है। झूठा शिक्षक किसी ऐसे मुद्दे पर ज़ोर देगा या ऐसे अध्ययन के लिए उकसाएगा जिससे किसी ज़्लास या बातचीत में उसकी उपस्थिति का पता चल सके।

पौलुस ने मसीही लोगों को ऐसे विवाद में भाग लेने के विरुद्ध चेतावनी दी: ''इन बातों की सुधि उन्हें दिला, और प्रभु के साज़्हने चिता दे, कि शज़्दों पर तर्क - वितर्क न किया करें, जिन से कुछ लाभ नहीं होता; वरन सुनने वाले बिगड़ जाते हैं'' (2 तीमुथियुस 2:14)। पौलुस ने तीतुस को ऐसे व्यवहार वाले लोगों से निपटने का तरीका भी बताया है: ''पर मूर्खता के विवादों, और वंशावलियों, और वैर विरोध, और उन झगड़ों से, जो व्यवस्था के विषय में हों बचा रह; ज़्योंकि वे निष्फल और व्यर्थ हैं। किसी पाखंडी को एक दो बार समझा बुझाकर उससे अलग रह'' (तीतुस 3:9, 10)।

उसका फल (आयतें 4, 5)

झूठे शिक्षक की जीवन शैली से मिलने वाला फल *बुरा* होता है!

1. झूठा शिक्षक ''द्वेष'' से पीड़ित होता है। वह ''दूसरे की श्रेष्ठता या सफलता को देखकर ईर्ष्या करता है।''[6] गड़बड़ी करने वाला व्यज़्ति 1 कुरिन्थियों 12:26 में दिए गए पौलुस के सिद्धांत को नहीं मानेगा, जिसमें कहा गया है कि ''यदि एक अंग दुख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुख पाते हैं।''

2. वह ''झगड़ा''[7] उत्पन्न करता है। दूसरे लोग एक झूठे शिक्षक के आस - पास तनाव पूर्ण वातावरण की उम्मीद कर सकते हैं और यदि वह उससे नहीं निकलता तो विरोध और भी बढ़ सकता है।

3. वह ''गाली गलौज''[8] का कारण बनता है। वह दूसरों के बारे में गलत बातें कह सकता है या गैर मसीहियों को परमेश्वर या कलीसिया के विरुद्ध बोलने के लिए उकसाने का कारण बन सकता है।

पौलुस की सूची की बनावट पर ध्यान दें। पहले तो एक व्यक्ति दूसरे की सफलता से जलता है। उससे झगड़ा या बहस होने लगती है। उस बहस से, झगड़ा दूसरे व्यक्ति के चरित्र के सम्बन्ध में निचले स्तर (गाली-गलौज) तक आ जाता है। उससे झूठा शिक्षक अपनी बुरी कल्पनाओं (बुरे - बुरे संदेहों को, जो पौलुस का अगला विषय है) तक जाएगा। उसके द्वारा पैदा की गई गड़बड़ी के हर क्षण से और अधिक नकारात्मक प्रतिक्रियाएं जन्म लेती हैं!

4. वह ''बुरे - बुरे संदेहों'' तक पहुंच जाता है।[9] इस आदमी की हर कल्पना बुरी है। जैसे एक कहावत है, ''सावन के अंधे को हरा ही हरा दिखाई देता है।'' हैंड्रिक्सन लिखता है, ''द्वेषपूर्ण व्यक्ति के मन का अविश्वास और उसके लक्षणों से ही पता चल जाता है। वह अपने विरोधी के हर काम पर संदेह करता है, ... वह कल्पना करता है कि जिस व्यक्ति को वह अपना प्रतिद्वंद्वी मानता है उसकी हर बात के पीछे कोई 'चाल' है।''[10]

5. अन्तत: वह ''न खत्म होने वाले झगड़े'' में पड़ जाता है। गड़बड़ी करने वाला व्यक्ति लम्बे समय से क्रोध में जकड़ा हुआ है। हैंड्रिक्सन ने ऐसे व्यक्ति का वर्णन इस प्रकार किया है:

> वह प्रतिशोध से उकसाया जाता, आरोप लगाने वाला होकर उत्तेजित हुआ, ''खून'' का प्यासा है। दो लोग ''एक दूसरे को गलत दिशा में *उत्तेजित करते* हैं'' (मूल भाषा में मूल विचार पर ध्यान दें)। उनकी ''धार्मिक'' चर्चाओं में प्राय: इस शब्द के प्रतिकूल अर्थ में *कटुनिंदा* होती है। ... ऐसे लोग कलहप्रिय, बेहद गंदी गाली देने वाले, पीड़ादायक अपमान और गाली गलौज से भरे या चुपके से घुस आने वाले, दुर्भावनापूर्ण, दोहरे अर्थ वाली आलोचना और दिखाई न देने वाले तिरस्कार से भरे होते हैं।[11]

पांचवां चरण परमेश्वर के बदला लेने को दिखा सकता है जिसमें यह रोगी मन अपनी बोई हुई फसल काटता है (देखिए गलतियों 6:7, 8; रोमियों 12:17-19)। इस व्यक्ति को जो अब न खत्म होने वाले झगड़े में फंस गया है, झगड़ा इतना पसन्द था कि परमेश्वर अब शायद उसी की इच्छा पूरी कर रहा है!

यह बहुत ही दुख की बात है कि यह व्यक्ति ''भ्रष्ट[12] मन वाला'' बन गया है। ये सभी प्रभाव परमेश्वर के ठोस, स्वस्थ शब्दों के विरुद्ध ही हैं (देखिए मत्ती 4:4; 23:1-3, 15; 24:24-26)।

ये लोग सचमुच ''सत्य से विहीन[13]'' हैं। विंसेंट ने ध्यान दिया कि 1 तीमुथियुस 1:19 और तीतुस 1:14 तो ऐसी घटनाओं का वर्णन करते हैं जहां लोग सच्चाई को अपने से दूर कर देते हैं, लेकिन ''यहां यह उनसे दूर कर दी गई'' है।[14] यिर्मयाह 7:28 कहता है, ''... सच्चाई नाश हो गई, और उनके मुंह से दूर हो गई है।''

झूठे शिक्षक लोगों में इस हद तक घुल मिल जाते हैं कि अनन्त जीवन की बातें उनसे ले लिए जाने के बावजूद (2 थिस्सलुनीकियों 2:10-12) यह सोचकर कि ''भज़्ति कमाई का द्वार है'' वे वह काम करते रहते हैं जो भाइयों में बुरा माना जाता है। इससे उनका परिणाम और भी खतरनाक हो जाता है, ज़्योंकि उनके अपने प्राणों के साथ - साथ उन भाइयों के प्राण भी जोखिम में पड़ जाते हैं जो उनसे प्रभावित होते हैं!

कितने दुख की बात है कि ये लोग भज़्ति को कमाई का ढंग मानते हैं, और अपने इस ढंग से पूर्ण विनाश की ओर जाते हैं (देखिए मज़ी 26:24; यूहन्ना 12:6)![15]

पाठ 19: भज़्ति और धन का सज़्बन्ध (6:6-11क)

लाभ देने वाली प्राथमिकता (आयतें 6-8)

गड़बड़ी करने वाले से पौलुस, लाभ देने वाली सकारात्मक प्राथमिकता की ओर मुड़ गया। आज के लिए विशेष तौर पर उसकी सलाह व्यावहारिक है। भौतिक धारणाओं और सज़्पज़ि से जुड़ी बातों का सामना इतना शायद ही किसी और पीढ़ी को करना पड़ा हो। यदि हम उस भौतिकवाद से जो हमें यहां पौलुस द्वारा तीमुथियुस को दिए गए अनन्त मूल्यों व शिक्षाओं से दूर करता है, बचने की उज़्मीद करना हर पीढ़ी के मसीही के लिए कितना आवश्यक है।

''संतोष सहित भज़्ति बड़ी कमाई है'' (6:6)। ''यहूदी रज़्बियों में एक बात प्रसिद्ध थी: 'धनी व्यज़्ति कौन है? वही जो अपने पास होने वाली चीज़ों से संतुष्ट है।' ''[16] आइए उस सिद्धांत को फिलिप्पियों 4:4-7, 11-13 के संदर्भ में डालकर उन पांच सुन्दर दानों पर ध्यान देते हैं जो भज़्ति में बढ़ने से मसीही व्यज़्ति को संतुष्टि प्रदान करते हैं:

1. सुरक्षा: ''प्रभु निकट है'' (फिलिप्पियों 4:5; देखिए इब्रानियों 13:5, 6; मज़ी 28:20)। यूनानी वाज़्यांश से संकेत मिलता है कि प्रभु आपके निकट है!

2. सामान: ''तुज़्हारे निवेदन ... परमेश्वर के सज़्मुख उपस्थित किए जाएं'' (फिलिप्पियों 4:6; देखिए मज़ी 6:25-33)। हमारी आवश्यकताओं को कलीसिया का कैशियर नहीं बल्कि परमेश्वर ही पूरा करता है!

3. आत्मिक दृष्टि: ''परमेश्वर की शांति, ... तुज़्हारे हृदय और तुज़्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी'' (फिलिप्पियों 4:7; देखिए प्रेरितों 16:25, 26; 2 कुरिन्थियों 8:1-3; 2 तीमुथियुस 4:7, 8)। यदि कोई हमारे मनों और विचारों की सचमुच में रक्षा कर दे, तो ज़्या उससे हमारी अधिकतर समस्याएं और तनाव खत्म नहीं हो जाएंगे?

4. संतुष्ट मन: ''मैंने यह सीखा है कि जिस दशा में भी हूं, उसी में संतोष करूं'' (फिलिप्पियों 4:11; देखिए 2 तीमुथियुस 4:17, 18)। यह अपने आप नहीं होता, परन्तु इस शानदार अवस्था को *सीखा* जा सकता है। किसी ने लिखा है, ''हमें केवल एक दिन का भोजन, कपड़े और आश्रय ही चाहिए; और यदि दोपहर से पहले ही हमारी मृत्यु हो जाती है, तो इससे आधा ही काफी होगा।''

5. दृढ़ मन: ''जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियों 4:13; देखिए रोमियों 8:31-39; 2 कुरिन्थियों 9:8-11; इफिसियों 3:20, 21)।

इस जीवन में प्रवेश के लिए भौतिक लाभ आवश्यक नहीं है (लूका 2:7), और सांसारिक सामान इकट्ठा करने से इस जीवन को छोड़ने में कोई परिवर्तन नहीं आता (लूका 16:19-25)। किसी ने कहा है, ''याद रखो कि जब आप मरोगे, तो जो कुछ आपका है वह उसी क्षण दूसरों का हो जाएगा, लेकिन *जो कुछ आप हैं* वह सदा तक आप के साथ रहेगा'' (देखिए लूका 12:13-21)। *आप मरने के पांच मिनट बाद अपने जीवन को इस समय कैसे देखेंगे? अनन्तकाल के पास से गुजरने के रूप में आप इसे कैसे देखेंगे? इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर आपके जीवन को कैसे देखेगा?*

ठण्डा होने पर शरीर को ढकना और भूखा होने पर इसे खाना खिलाना शारीरिक शांति है। दूसरी सब इच्छाएं और भूख का सम्बन्ध दिमाग से है ज़्योंकि ये दिमाग से निकलती हैं। इसमें ऐपिकुरस की फिलॉस्फी की व्याज़्या मिल सकती है। उससे प्रसन्नता तथा संतुष्टि का रहस्य पूछे जाने पर उसका उज़र था, ''मनुष्य की सज़्पज़ियों में कुछ मत बढ़ाओ, लेकिन उसकी इच्छाओं में से निकाल अवश्य दो।''

भज़्ति न्याय के लिए मनुष्य को संतुष्ट करेगी (सभोपदेशक 12:13, 14; 2 कुरिन्थियों 5:10)। इसलिए सब असंतुष्ट लोगों के लिए अच्छा होगा कि वे फिर से देख लें कि उनके लक्ष्य ज़्या हैं (मज़ी 6:31-33; याकूब 4:1-4)।

यीशु ने धन से ही नहीं, धन के ''धोखे'' से भी सावधान किया (मज़ी 13:22)। हम अपनी जीवन शैली की इच्छा के असर से बच नहीं सकते। जब हमारे जीवन में बहुत सी ''इच्छाएं'' प्रवेश कर जाती हैं, तो संतुष्टि गायब हो जाती है। हाय उस व्यज़्ति पर जिसका शौक तो राजकुमारों जैसा है पर आमदनी भिखारियों जैसी! हाय उस सुसमाचार प्रचारक पर जिसकी प्रेरणा उसकी सेवकाई नहीं बल्कि धन है, जो परमेश्वर की शिक्षाओं और नियमों के बजाय सज़्पज़ि प्राप्त करने को लालायित है, जो लोगों के मन परिवर्तन के बजाय धन जमा करने में दिलचस्पी लेता है!

महंगी पड़ने वाली प्राथमिकता (आयतें 9-11क)

आयत 9 और 10 में पौलुस ने उन लोगों को होने वाली बहुत सी हानियों के बारे में बताया जो धन कमाने को अपनी सबसे बड़ी प्राथमिकता बना लेते हैं।

पहली हानि तो स्वतन्त्रता की है (6:9)। धन का लोभी ''परीक्षा और फंदे'' में फंसकर चोटी से गिर जाता है (देखिए मज़ी 19:16-22; मरकुस 10:17-22)। पहले तो

छोटी सी इच्छा या ''परीक्षा'' ही आती है।[17] छोटी इच्छा ''फंदे'' में फंसा लेती है।[18] जब कोई एक विशेष दिशा की ओर अर्थात एक विशेष इच्छा को पूरा करने के लिए चल पड़ता है, तो *अचानक* वहां से निकलने का कोई मार्ग नहीं होता। (अर्थात, बुरा होने से रोकने में बहुत देर हो चुकी होती है। यदि हम परमेश्वर की योजना में उसके साथ सहयोग करें तो उसके अनुग्रह से हम किसी भी पाप पर विजय पा सकते हैं।) गलत पसन्द चुनकर व्यक्ति अज़्सर अपनी पहली मूर्खता को उचित ठहराने की कोशिश करता है जो उस चरण का द्वार होती है जिसका पौलुस ने उल्लेख किया।

दूसरी हानि तर्क की होती है (6:9)। गिरा हुआ व्यक्ति ''बहुतेरी व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में'' पड़ जाता है (देखिए 2 पतरस 2:15; गिनती 22:2-21; 23:1-11)। इस स्थिति में पहुंचने पर, व्यक्ति के इससे बाहर निकलने की उज़्मीद बहुत कम रहती है (देखिए इब्रानियों 6:4-6; नीतिवचन 1:24-31)। आइए अब इन लालसाओं की प्रकृति की समीक्षा करते हैं।

वे ''मूर्ख'' हैं। विवेकहीन लालसाएं विनाश की ओर ले जाती हैं! इन लालसाओं से पराजित व्यक्ति जब तक इनमें से नहीं निकलता, वह अनन्तकाल के लिए कराहता रहेगा कि ''ज़्यों, हाय, मैंने ऐसा ज़्यों किया? मैंने ज़्या सोचा था?'' हमें चेतावनी दी गई है, ''ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है'' (नीतिवचन 14:12)।

वे ''हानिकारक'' व नुज़्सान पहुचाने वाली हैं। *लालसा* सचमुच में कितनी कठोर है! हम जान सकते हैं कि यह पीड़ादायक है ज़्योंकि पाप और लालच दोनों ही नुज़्सान पहुंचाने वाले, घाव देने वाले और विनाश करने वाले हैं और एक बार इनमें फंसने वाला व्यक्ति बार बार इन्हें करता है! *तर्क और सत्य तो पुकार पुकारकर कहते हैं कि इसमें कोई समझदारी नहीं है, परन्तु धन की लालसा में फंसा व्यक्ति तर्क के अभाव से पीड़ित है!*

तीसरी हानि प्राण की है (6:9)। और धन पाने की लालसा ''मनुष्यों को बिगाड़[19] देती है और विनाश के समुद्र में डुबो''[20] देगी।[21] इसमें ऐसे व्यक्ति का चित्र दिखाई देता है जो तब तक पाप में डूबता ही जाता है जब तक वह हर प्रकार की भलाई छोड़ नहीं देता और ''विनाश'' तक नहीं पहुंच जाता। प्राण की इस हानि का चित्रण करने के लिए इससे अच्छे शज़्द नहीं होंगे।

चौथी, शुद्धता की हानि (6:10)। ''ज़्योंकि रुपए का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है।'' आत्मा को दूषित करके क्रूस पर चढ़ाने वाला धन नहीं बल्कि धन का मोह ही होता है। आकान के पाप से इस प्रवृज़ि का पता चलता है। यहोशू 7:21 में उसने कहा, ''... मैंने ... लालच करके ... रख लिया।'' आकान ने पाप किया और फिर उसका कष्ट सहा। डिमोक्रिटुस का कहना था, ''धन का लालच, सब प्रकार की बुराइयों की राजधानी है।'' फिलो ने ''धन के लोभ'' की बात की ''जो व्यवस्था के सबसे बड़े अपराधों का आरज़्भ है।'' धन के लालच ने बहुत से शुद्ध मन वाले लोगों को अपनी पकड़ में लेकर दूषित कर दिया है।

अगली हानि विश्वास की है (6:10)। इस मूर्खता के कारण लोग ''विश्वास से

भटक'' जाते हैं (1 तीमुथियुस 1:18-20; तीतुस 1:10, 11)। पैसे के लालच में कई घर तबाह हो गए हैं। अपने विश्वास को गंवा देने वाला व्यक्ति संसार पर *विजय पाने* के बजाय संसार की ओर *आकर्षित होता* है (1 यूहन्ना 5:4)।

अन्तिम हानि संतुष्टि की है (6:10)। ऐसा करने के कारण, धन के लोभियों ने ''अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है'' (देखिए मत्ती 26:24, 25; 27:3-5; 2 कुरिन्थियों 7:10)। संसार का शोक मृत्यु लाता है। यहूदा इस्करियोती समझ गया था कि उसका शोक धन के लोभ के कारण था। इस संसार के धन से प्रेम करने वालों को ''*बहुत से* दुखों''[22] का सामना करना पड़ेगा। *इस धोखेबाज बुराई की और भी बहुत सी हानियां हैं!*

एक तर्कसंगत निष्कर्ष दिया गया है (6:11क)। पौलुस की चेतावनी और आज्ञा कितनी उपयुक्त है कि ''हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग[23]।'' परमेश्वर की बिनती यह है कि ''अपने मन से या पांवों से इस दिशा में चलना भी न। इसका आकर्षण तो बड़ा हो सकता है लेकिन इससे मिलने वाली पीड़ा भी कम नहीं!'' इससे कहीं अधिक अच्छे मार्ग को चुनना लाभदायक है। 2 तीमुथियुस 2:22 में पौलुस लिखता है, ''जवानी की अभिलाषाओं से भाग; और जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं, उनके साथ धर्म, और विश्वास, और प्रेम, और मेल मिलाप का पीछा कर।'' इन अच्छे अनुसरणों पर पौलुस ने आगे बताना था।

पाठ 20: तीमुथियुस को गंभीरतापूर्वक ताड़ना दी गई (6:11ख-16)

नकारात्मक से पौलुस सकारात्मक की ओर मुड़ गया। भागने के खतरे हैं, ढूंढ़ने के लाभ भी हैं: ''धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा कर'' (6:11ख)। ये प्राथमिकताएं मसीही व्यक्ति का स्वाभाविक लक्ष्य होनी चाहिए (देखिए 1 यूहन्ना 2:20; 1 पतरस 2:9, 10; 2 तीमुथियुस 3:17)। तीमुथियुस को ''परमेश्वर का जन'' कहते हुए पौलुस ने उसके सामने सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में उसकी सामर्थ की गरिमा रखते हुए अपना बड़ा भरोसा जताया।

परमेश्वर का जन: उसका कार्य (आयत 11ख)

पत्री के इस भाग में तीमुथियुस या परमेश्वर के किसी भी बालक के लिए ''पीछा''[24] करने के कुछ सिद्धांत दिए गए हैं। ''पीछा'' करने का ही यूनानी शब्द गंभीरतापूर्वक प्रयास की मांग करता है। सुस्त अर्थात देर लगाने वाला सेवक अयोग्य है। जिन गुणों की पौलुस ने सूची दी है उनके लिए हर दिशा में फैलने वाले मानसिक नज़रिया आवश्यक है।

बाहर दूसरों की ओर। एक मसीही व्यक्ति को ''धर्म''[25] का पीछा परिश्रम से करना चाहिए। धर्म में न केवल उद्देश्य लेकर परमेश्वर तक ही बल्कि व्यावहारिक रूप में लोगों तक पहुंचना भी है!

ऊपर परमेश्वर की ओर। ''भक्ति'' को पाने में लगे रहना चाहिए ज़्योंकि ऐसा व्यक्ति परमेश्वर की उपस्थिति को मानकर समझ से चलता है। पहला तीमुथियुस में यही विचार है (2:2, 10; 3:16; 4:7, 8; 6:3, 5, 6)।

अन्दर की ओर अपने लिए। इस पीछा करने का एक भाग अपने ''विश्वास''[26] को बढ़ाने का लक्ष्य रखना है। जब तक किसी का सरगरम विश्वास (परमेश्वर में और उसकी प्रतिज्ञाओं में विश्वास व भरोसा) नहीं है, तब तक उसकी भक्ति नहीं बढ़ेगी और उसके धर्म से दूसरों को आशीष नहीं मिलेगी। संसार पर विजय पाने के लिए विश्वास वह आधार है जिससे हम ईश्वरीय स्वभाव को अपना सकते हैं (1 यूहन्ना 5:4; रोमियों 10:17)। हमारा विश्वास परमेश्वर और मसीह को जानने पर आधारित है (2 पतरस 1:2-4)। हम में से कितने ही लोगों को मरकुस 9:24 की प्रार्थना की आवश्यकता है!

अन्दर और बाहर और ऊपर और सब तरफ। दिशा या गहराई के रूप में अगले गुण की कोई सीमा नहीं है। हर चेले के लिए ''प्रेम''[27] को बढ़ाना आवश्यक है। परमेश्वर की तरह ही, प्रेम *हर जगह* और *अनन्तकालिक* है (1 यूहन्ना 4:8; 1 कुरिन्थियों 13:4-8, 13)। प्रेम बहुत से पापों को ढांप सकता है (1 पतरस 4:8; याकूब 5:19, 20)।

आगे को। अगले सभी गुण ''धीरज''[28] को जोड़ने पर बाहर जाने के विशेष आयाम को अपना लेते हैं। 1 कुरिन्थियों 13:7 के अनुसार प्रेम सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, और सब बातों में धीरज धरता है। उस भली, भक्तिपूर्ण विशेषता को पाने वाला कमजोर व्यक्ति की निर्बलताओं को सहते हुए कितनी ही बार ''दो कोस'' और चला जाएगा।

तीमुथियुस को इफिसुस की समस्याओं को सुलझाते समय निराशा और हताशा का भी सामना करना पड़ा। सुसमाचार का हर प्रचारक उन लोगों की असफलताओं का साक्षी होता है जिन्हें उससे अच्छा काम करना चाहिए था। प्रेम के साथ धीरज का होना आवश्यक है, वरना नकारात्मक व्यवहार (यह कहना कि, ''छोड़ो! जाने दो!'') दिन पर शासन कर सकता है!

दूसरों के साथ सावधान। मत्ती 12:20 मसीह के विषय में कहता है, ''वह कुचले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा; और धुआं देती हुई बत्ती को न बुझाएगा, जब तक न्याय को प्रबल न कराए।'' मसीह के पदचिह्नों पर चलने वाले व्यक्ति को ''नम्रता'' का गुण पाना आवश्यक है। तीमुथियुस के लिए या किसी भी सफल सुसमाचार प्रचारक के लिए काम में इस सामग्री में यह सामान कितनी अच्छी तरह आ जाता है। प्रेम और धीरज के अतिरिक्त गुण मसीह के सेवक को न केवल दूसरों की आवश्यकताएं पूरा करने के योग्य बनाते हैं बल्कि उसे ऐसा करने में ''दयालु स्वज़ाव'' भी देते हैं! यीशु के पीछे चलने का सर्वोत्तम चरण यही है। ऐसा करना और इसे सज़्भालकर रखना ही काफी नहीं है, बल्कि विनम्र बने रहना आवश्यक है। आत्मिक सेवा करने में *सेवा करने के आपके ढंग* पर बहुत निर्भर करता है (2 कुरिन्थियों 12:14, 15; 1 थिस्सलुनीकियों 2:7-12)।

परमेश्वर का जनः उसका आदर्श (आयतें 12-14क)

परमेश्वर के जन के लिए तीन बातों को माना आवश्यक है। इनमें पौलुस ने भविष्य के लिए आत्मा, अतीत से की गई प्रतिज्ञा, और हर युग और हर प्रकार की सेवा के लिए समर्पित दृष्टिकोण को शामिल किया।

योद्धा बनना (आयत 12)

''अच्छी कुश्ती लड़।''[29] भलाई के लिए संघर्ष करने से दूसरों की आत्माओं को कितना अधिक प्रभावित करेगा। इब्रानियों 11:3-40 इस बात का संकेत देता है कि सदियों से परमेश्वर के लोगों के लिए ऐसी कुश्ती का ज़्या अर्थ है (देखिए इब्रानियों 12:1-3; 2 कुरिन्थियों 11:23-28; 2 तीमुथियुस 4:7, 8)। ज़्या आप यह अच्छी कुश्ती लड़ रहे हैं?

अपने अंगीकार में बना रहना (आयतें 12, 13)

मसीह को जाने बिना उसमें विश्वास करने का हमारा अंगीकार एक मजाक होता (देखिए मत्ती 16:13-18; रोमियों 10:9, 10)। परन्तु हमें याद रखना चाहिए कि उसे जानने का अर्थ उसकी आज्ञा मानना है (लूका 6:46; 1 यूहन्ना 2:3-6)। इसलिए हमारा अंगीकार ही हमें अपने विश्वास की कुश्ती लड़ने और परमेश्वर की आज्ञाओं को (जिनमें से कुछ निज़्न हैं) मानने की चुनौती होना चाहिए।

यह तथ्य कि तीमुथियुस ने ''बहुत गवाहों'' के सामने अंगीकार किया था अब उसने आगे बढ़ने का प्रोत्साहन होना था। अपने विश्वास का प्रचार करने के लिए उसने सुनने वालों में से किसी को निराश नहीं करना था। इस अंगीकार को ध्यान में रखने से उसे परमेश्वर के पुत्र की चमक के विरुद्ध खड़े होने वाले किसी भी व्यज़्ति का सामना साहस से करने के लिए हिज़्मत मिलनी थी।

आज्ञाओं को मानने के लिए ईमानदार रहना (आयत 14)

पौलुस की आज्ञा में एक साथ दो आदेश थे। हमें चाहिए कि *अपने आप को पूरी तरह से शुद्ध रखते हुए* अर्थात ''निष्कलंक'' रहकर आज्ञा का पालन करें। इसके अलावा हमें *लोगों की स्वीकृति* अर्थात ''निर्दोष''[30] रहते हुए आज्ञा का पालन करना है। ये दो गुण अपने अन्दर शुद्ध विवेक और बाहर के लोगों में अच्छा नमूना पेश करेंगे।

परमेश्वर का जनः उसे मिलने वाले लाभ (आयतें 14ख-16)

इन चुनौतीपूर्ण गुणों और आज्ञाओं का पीछा करने से मिलने वाले लाभों को नज़रअन्दाज नहीं करना चाहिए। कभी न खत्म होने वाला जीवन तो अब शुरू होता है (यूहन्ना 5:24; गलातियों 3:26-29) और ''ठीक समयों में'' चरम पर पहुंचता है (6:15; 1 पतरस 1:3-5; प्रकाशितवाज़्य 21:1-7)। *अनन्तकाल कितना तेजोमय होगा!*

कभी न खत्म होने वाले जीवन का आधार इस तथ्य से है कि प्रभु एक मापदण्ड

ठहराता है (6:13)। तनाव के दौर से गुज़रते हुए या परीक्षा में पड़े किसी भी व्यक्ति के लिए यह याद रखना आवश्यक है कि प्रभु ने भी अच्छे अंगीकार की ''साक्षी दी'' है।[31] मसीह ने मृत्यु के सामने होने की स्थिति में राज्यपाल के सामने अपना अंगीकार किया था (मत्ती 27:11; मरकुस 15:2; लूका 23:2, 3; यूहन्ना 18:36, 37)। ज़्योंकि मसीह ने स्थिर रहकर बात की, इसलिए पौलुस ने ऐलान किया कि यही जीवन-शैली उसके लौटने के महिमामय क्षण के समय तक रहेगी (प्रेरितों 1:9-11; फिलिप्पियों 3:20, 21; कुलुस्सियों 3:1-4)। *कितना अद्‌भुत दृश्य होगा मसीह का प्रकट होना (6:14ख, 15ख, 16)*!

मसीह को बहुत महिमा दी गई है; वह ''परमधन्य और अद्वैत अधिपति'' है (1 तीमुथियुस 1:11; फिलिप्पियों 2:5-9)।

मसीह को स्वर्गीय सम्मान मिला है; वह ''राजाओं का राजा'' है (मत्ती 28:18-20; इफिसियों 1:20-23; प्रकाशितवाक्य 17:14)।

मसीह सामर्थ में सर्वश्रेष्ठ है; वह ''प्रभुओं का प्रभु'' है (प्रकाशितवाक्य 19:11-16)। मसीह अनन्तकाल से और वर्तमान में है; ''अमरता केवल उसी की है'' (भजन संहिता 90:1, 2; 2 तीमुथियुस 1:10; 1 यूहन्ना 1:1-4; मत्ती 28:20)। मसीह तेजपूर्ण महिमा में रहता है; ''वह अगम्य ज्योति में रहता है'' (भजन संहिता 104:2; यूहन्ना 8:12; 1 यूहन्ना 1:5, 7)।

ये बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं और झकझोर कर रख देने वाली सम्भावनाएं किसी भी प्राणी के लिए लड़ने, विश्वासी रहने और मसीह की आज्ञाओं को मानने का प्रण करने के लिए पर्याप्त होनी चाहिए! *सचमुच, कितना अद्‌भुत उद्धारकर्ता है!*

पाठ 21: धनी लोगों के लिए सिफारिशें (6:17-19)

पौलुस ने कहा, ''और यदि हमारे पास खाने और पहनने को हो, तो इन्हीं पर संतोष करना चाहिए'' (6:8)। किसी के पास खाने-पीने और पहनने से अधिक होने पर ज़्या होगा? ज़्या धनी व्यक्ति स्वर्ग में जा सकता है? लूका 18:24, 25 में, यीशु ने कहा, ''धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है! परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई की नोक में से निकल जाना सहज है।'' यह पूछे जाने पर कि फिर किसका उद्धार हो सकता है, उसने कहा, ''जो मनुष्य से नहीं हो सकता, वह परमेश्वर से हो सकता है।'' हम यह तो नहीं जानते कि कितने धनी लोग स्वर्ग में जाएंगे, परन्तु एक आदमी के बारे में हम अवश्य जानते हैं जिसका नाम अब्राहम था (मत्ती 8:11; उत्पत्ति 13:1, 2)।

परमेश्वर का वचन धनवानों को समझदारी और आनन्दपूर्वक जीवन बिताते हुए धन और परमेश्वर दोनों को पाने के योग्य बनाने के लिए ईश्वरीय मार्ग दर्शन देते हुए धनवानों को श्रद्धांजलि देता है। पौलुस ने धनवानों को सलाह दी कि इस घोल को पाने के लिए किस चीज़ से दूर रहें और ज़्या करें।

ज़्या न करें (आयत 17)

पौलुस ने धनवानों से ''अभिमानी''[32] न होने का आग्रह किया। अभिमान मनुष्य को निर्धन और पीड़ित लोगों की सहायता करने से रोकेगा। घमण्डी लोग दूसरों की व्यावहारिक आवश्यकताओं की चिंता नहीं करते हैं (देखिए लूका 16:19-25)। स्वार्थ का भ्रम लोगों को सच्चाई सुनकर भी उसे मानने से रोक सकता है।

सज़्पन्न लोगों के ''चंचल धन पर'' आशा रखने का जोखिम होता है। (देखिए सभोपदेशक 10:19; भजन संहिता 52:7; 62:10, 11; लूका 12:16-21; मरकुस 10:17-22.)। हैनरिक इज़्सन ने ठीक ही कहा है, ''धन बहुत सी चीज़ों का खोल तो हो सकता है पर गरी नहीं। इससे आपको भोजन तो मिलता है, पर भूख नहीं; दवा तो मिलती है पर स्वास्थ्य नहीं; जानकारी तो मिलती है पर मित्र नहीं; नौकर तो मिलता है पर निष्ठा नहीं; आनन्द के दिन तो मिलते हैं पर शांति नहीं।''[33]

ज़्या करें (आयतें 17-19)

सबसे पहले तो धनवानों को चाहिए कि ''आशा ... परमेश्वर पर'' रखें। याकूब 1:17 जैसी बहुत सी आयतें बताती हैं कि ऐसा ज़्यों करना आवश्यक है। परमेश्वर महान दाता है और हमारी सब आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है।

दूसरा, धनवानों को यह ध्यान रखना चाहिए कि वे ''भलाई करें''[34] (6:18)। पौलुस ने भलाई करने के लिए मार्गदर्शन दिया:

1. भलाई की *मात्रा* बताई गई। धनवान लोगों को ''भले कामों में धनी''[35] बनना चाहिए। इस आज्ञा को पूरा करने वाले के लिए *भला करने के योग्य होना* आवश्यक है।

2. भलाई करने का *ढंग* बताया गया। धनवानों को चाहिए कि वे ''सहायता देने में तत्पर'' हों। दान देने वाला व्यज़्ति *भलाई करना चाहता है।*

3. उदार होने का पता लोगों की *आदत* से ही चल जाता है। उन्हें ''सहायता देने में तत्पर''[36] रहना चाहिए। KJV में कहा गया है कि वे ''बातचीत करने को तैयार'' रहते हैं। वे न केवल परोपकारी मन के होते हैं बल्कि यह देखने के लिए कि लोगों की आवश्यकताएं ज़्या हैं और कैसे पूरी हो सकती हैं उनमें घुल - मिल जाते हैं। वे बीमा कज़्पनियों की तरह नहीं होते जो यह सुनिश्चित करती हैं कि आप उन्हें किस्तें तो देते रहें पर कोई खर्चा न डालें। इसके विपरीत, ये वे लोग होते हैं जो अच्छे या बुरे हर समय में आपके साथ संगति बनाकर उसे निभाएंगे। ये लोग *भलाई करते जा रहे हैं*।

पाठ 22: अंतिम आग्रह (6:20, 21)

पौलुस ने तीमुथियुस से झूठी शिक्षा में किसी भी तरह फंसने से दूर रहते हुए परमेश्वर के वचन के लिए दृढ़ रहने की अपील की। इस तथ्य से पौलुस ने पत्री के अन्त में ''हे तीमुथियुस'' जोड़ा, उसकी बिनती की गहराई का पता चलता है।

सकारात्मक भाग (आयत 20)

तीमुथियुस ने किसी चीज़ की ''रखवाली''[37] करनी थी (6:20)। सावधानी से की गई यह सुरक्षा एक दिशा में ''थाती'' थी। यह यूनानी भाषा के शब्द *paratheke* का अनुवाद है जिसका अर्थ ''धरोहर'' है।[38] वही तीमुथियुस को सौंपी गई धरोहर थी वैसे ही हर सुसमाचार प्रचारक को आगे दी गई है: ''... उसने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है'' (2 कुरिन्थियों 5:19; 1 तीमुथियुस 1:11 भी देखिए)। कितना उपयुक्त है कि हर सुसमाचार प्रचारक पौलुस के शब्दों की ओर ध्यान दे! हमें स्वर्ग की थाती अर्थात धरोहर सौंपी गई है। हमें इसका इस्तेमाल बड़ी गंभीरता से करना चाहिए ताकि यदि हम स्वयं वहां जाने की आशा करते हैं तो इसे इसके सही स्थान पर मूल रूप में लौटा सकें (देखिए यूहन्ना 17:8-24)।

जब कोई परमेश्वर के वचन का इस्तेमाल उस तरह से करने में असफल रहता है जैसा परमेश्वर ने चाहा था तो ज़्या होता है? गलतियों 1:6-9 कहता है, ''मुझे आश्चर्य होता है, कि जिस ने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे हो। ... परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो स्रापित हो। ...''

नकारात्मक भाग (आयतें 20, 21)

तीमुथियुस के लिए कुछ विशेष खतरों से बचना आवश्यक था। उसे ''अशुद्ध बकवाद और विरोध की बातों से'' परे रहना था (6:20)। समय बहुत ही कीमती है। सच्चाई बहुत ही कीमती है और सच्चाई की मनुष्य को इतनी अधिक आवश्यकता है कि किसी भी सुसमाचार प्रचारक को अशुद्ध बकवास से अपना समय व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए!

इसके अलावा तीमुथियुस को ''विरोध की बातों'' से दूर रहने की आवश्यकता थी जिसे लोग ''ज्ञान'' कहने की गलती करते हैं। हमें ऐसी शिक्षाओं से जो एक दूसरे के विरुद्ध हों, दूर रहना चाहिए। परमेश्वर फूट या गड़बड़ी का परमेश्वर नहीं है (1 कुरिन्थियों 1:10; 14:33)। यहां जिस बात की निन्दा हो रही है वह झूठ मूठ का ज्ञान है जिसमें लोग अपने आप को समझदार मान तो रहे हैं लेकिन हैं नहीं (1 तीमुथियुस 1:7; 1 कुरिन्थियों 1:26-29)। एक सुसमाचार प्रचारक खरी बातों की रक्षा करेगा (2 तीमुथियुस 1:13, 14), परन्तु उसे ज्ञान के झूठे दावों को बढ़ावा नहीं देना चाहिए। शब्दों के विवाद से कुछ लाभ नहीं हो सकता; इसका कोई फल नहीं मिलेगा (1 तीमुथियुस 6:3-5)।

यहां पर तीमुथियुस फल देखकर बात कर सकता था (मत्ती 7:20) ज़्योंकि कुछ लोगों ने इन विचारों का ''अंगीकार''[39] कर लिया था (6:21)। अपनी घोषणाओं, प्रतिज्ञाओं और अंगीकारों से, वे ''भटक'' गए थे।[40] वे बुरी तरह से निशाना चूक गए थे, अर्थात वे ''विश्वास से'' भटक गए थे (देखिए प्रेरितों 6:7; यहूदा 3)।

''निशाने से चूकना'' या भटकना कितनी गंभीर बात है! उन नियमों को लागू करने की बात हो जिनकी आज्ञा परमेश्वर ने नहीं दी या उन आज्ञाओं की उपेक्षा की जो मानने के

लिए परमेश्वर ने दी थीं, हमें चाहिए कि इन लोगों की कभी न मानें (प्रेरितों 15:1-5; लूका 6:46; मत्ती 7:21-23)। विश्वास से फिरने वालों के बारे में तीमुथियुस को इस अन्तिम ताड़ना में, पौलुस पहले की तरह तीमुथियुस को झूठे शिक्षकों से सावधान रहने और सुसमाचार की सच्चाई में दृढ़ता से बने रहने के लिए उत्साहित किया (देखिए 1:3, 4, 6, 7, 19, 20)।

यह कहते हुए कि "तुम पर अनुग्रह होता रहे"[41] पौलुस ने आत्मिक परवाह का एक अंतिम संकेत दे दिया। परमेश्वर का अनुग्रह ही है कि हम पूरी तरह से उसका भला काम करने के योग्य हुए हैं।

संक्षेप में

तीमुथियुस के नाम पौलुस की पहली पत्री *समयानुसार* भी है और *समयहीन* भी। आज के सुसमाचार प्रचारक को चाहिए कि इन सच्चाइयों पर मनन करे, इसके सिद्धांतों को आत्मसात करे और इसकी सलाह और आज्ञाओं से निरन्तर सेवा के लिए अपने आप को तैयार करे।

एक मण्डली के सदस्यों या देह के अंगों के रूप में कलीसिया को सामूहिक मार्गदर्शन और व्यक्तिगत निर्देशों को ढूंढ़ना चाहिए जो परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई इस पूरी पत्री में सुनहरी धागों की तरह बुने गए हैं। जिम्मी वुड का कहना है:

> यदि सिय्योन के बुर्जों को मज़बूत करना है, यदि कलीसिया को बढ़ाना हो, यदि आत्माओं का उद्धार करना है, तो हमारे लिए सुसमाचार में अपने पुत्र के नाम पौलुस की पहली पत्री के सतर्क छात्र होना आवश्यक है। पवित्र लेख में इसके महत्व से कौन इनकार कर सकता है, हमारे जीवनों में इसकी अनिवार्यता पर प्रश्न उठाने का साहस किसमें है? प्रियो, हमें सदा इस निष्कर्ष पर ध्यान देना चाहिए कि बाइबल के पूर्ण होने के लिए यह पत्री उतनी ही आवश्यक है जितने देह के पूर्ण होने के लिए हमारे हाथ।[42]

पाद टिप्पणियां

[1]खरा (यू.: *hugiaino*) - "स्वस्थ, अच्छा, ठोस, डॉक्ट्रिन (शिक्षा) की गलती के बिना, ... सच्चा, शुद्ध, मिलावट रहित" (एडवर्ड रोबिन्सन, *ए ग्रीक एण्ड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* [न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1863], 627)। [2]भक्ति (यू.: *eusebeia*) - "परमेश्वर के प्रति ... श्रद्धा, भय ... मन की भावना ... सुसमाचार की योजना" (रोबिन्सन, 307)। [3]धोखे में (यू.: *tuphoo,* कर्मवाच्य) -"फूलना ... घमण्ड या धोखे से अन्धे होना, मूर्खता करना" (सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिज़्म, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ एच. थेयर [एडिनबर्ग स्कॉटलैण्ड टी. एण्ड टी. ज़्लार्क, 1901; रीप्रिंट संस्क., ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1977], 633)। [4]रोगी (यू.: *nosso*) - "बीमार होना; ... मन की कोई भी बीमारी ... किसी चीज़ में ऐसे दिलचस्पी लेना जैसे उसका रोगी हो,

किसी चीज़ के बीमार होना'' (थेयर, 429)। [5]शब्दों का झगड़ा (यू.: *logomachia*) – ''... शब्दों का युद्ध, या व्यर्थ बातों पर बहस।'' [6]*वेबस्टर'स स्टूडेंट्स डिक्शनरी,* 1945 संस्क। s.v. ''envy। '' [7]झगड़ा (यू.: *eris*) – ''कलह, विवाद ... झगड़े'' (वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 2रा संस्क., संशो. विलियम एफ़. अर्ड्ट एण्ड एफ़. विल्बर गिंगरिक [शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957], 309)। [8]गाली गलौज (यू.: *blasphemia*) – ''गाली देना ... बदनामी, निन्दा करना, किसी के अपमान की बातें बोलना: ... विशेषतया ईश्वरीय महिमा के लिए अशुद्ध और निन्दात्मक भाषा'' (थेयर, 102–3)। [9]संदेह (यू.: *huponoia*) – ''आशंका'' (रोबिन्सन, 750); ''गुप्त विचार, प्रेरितों 25:18; 27:27'' (मेरविन आर. विनसेंट, *वर्ड स्टडी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अंक 4 [ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं. 1957, 274])। [10]विलियम हैंड्रिक्सन, *ए कमैन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* (लंदन: द बैनर ऑफ़ ट्रुथ ट्रस्ट, 1964), 197.

[11]वहीं, 197. [12]भ्रष्ट (यू.: *diaphtheiro*) – ''... बदतर होने के लिए बदलना, मनों को भ्रष्ट करना, नैतिकताएं ... विनाश करना, नष्ट करना ... मारना'' (थेयर, 143)। [13]विहीन (यू.: *apostereo*) – ''ठगना, लूटना, लूटना –खसोटना,'' (थेयर, 68)। [14]विनसेंट, 275. [15]विलियम बार्कले ने इन पदों को यह कहते हुए संक्षिप्त किया है, ''(1) [झूठे शिक्षक की] पहली विशेषता धोखा देना है। उसका पहला लक्ष्य अपनी ही प्रशंसा करना है। उसकी इच्छा मसीह को दिखाना नहीं बल्कि अपने आप को दिखाना है। ऐसे भी प्रचारक तथा शिक्षक हैं जिनकी दिलचस्पी लोगों को यीशु मसीह के बजाय अपने पीछे लगाने की है। उनकी दिलचस्पी लोगों को परमेश्वर के वचन तक लाने के बजाय अपने विचार मनवाने की है। ... (2) उसकी दिलचस्पी [उलझाने वाले] अनुमानों वाली है। ऐसे भी मसीही हैं जिनकी दिलचस्पी जीवन के बजाय बहस में है। ... अपनी पुस्तक *क्रिश्चियन डॉक्ट्रिन* में जे. एस. व्हेल [ने लिखा], '... हम पवित्र भूमि पर खड़े होकर अपने पांवों से जूते निकालने के बजाय, अलग – अलग कोणों से जलती हुई झाड़ी के फोटो ले रहे हैं अर्थात हम मसीह के घावों के सामने दण्डवत करने के बजाय, अपने पांवों से वेदी पर प्रायश्चित की थ्यौरियां बना रहे हैं।' ... (3) झूठा शिक्षक शांति भंग करने वाला है। वह मुकाबला करने पर उतारू है; उसे अपने से अलग विचार रखने वालों पर संदेह होता है; किसी बहस में पराजित होने पर उसे अपने विरोधी की थियोलॉजिकल बात और यहां तक कि उसके स्वभाव से भी आघात लगता है; किसी भी बहस में उसके स्वर का लहज़ा प्रेम भरा नहीं बल्कि कड़वा ही होता है जिस कारण चर्चा तकरार की ओर ही मुड़ जाती है। ... (4) झूठा शिक्षक धर्म का व्यापारीकरण कर देता है। वह इससे भी लाभ उठाना चाहता है। वह अपनी शिक्षा तथा प्रचार को एक परित्याग के रूप में नहीं बल्कि पेशे के रूप में देखता है। वह दूसरों की सेवा के नहीं बल्कि अपने आप को बढ़ाने के काम में लगा है।'' (विलियम बार्कले, द *लैटर टू तिमोथी, टाइटस टू फिलेमोन,* द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़, संशो. [फिलाडेल्फिया: वैस्ट मिंस्टर प्रैस, 1960], 146–48)। [16]वहीं। [17]परीक्षा (यू.: *peirasmos*) – ''पाप करने का प्रलोभन ... इच्छा से हो या बाहरी परिस्थितियों के कारण'' (थेयर, 498–99)। [18]फंदा (यू.: *pagis*) – ''जाल, जिससे खतरा, हानि, विनाश आता हो: अचानक और अप्रत्याशित खतरनाक जोखिम ... पाप के प्रलोभन तथा आकर्षण'' (थेयर, 472)। [19]बिगाड़ (यू.: *olethros*) – ''विनाश ..., मृत्यु, शरीर के विनाश के लिए, अनन्त रोगों और समस्याओं की बात जिनसे शरीर की लालसाएं, वशीभूत होकर नष्ट हो जाती हैं ... आशीषित जीवन को मृत्यु के बाद खो देना, भविष्य की पीड़ा'' (थेयर, 443)। [20]डूबना (यू.: *buthizosin*) – ''गहरे में गोता लगाना; डूबना'' (थेयर, 106)। वर्तमान, सांकेतिक, क्रिया विशेषण से संकेत मिलता है कि यह कार्य डूबने के विनाश तक पहुंचने *तक जारी रहता* है।

[21]विनाश (यू.: *apoleia*) – ''पूर्ण विनाश ... व्यर्थ ... भीषण, दुर्दशा के विचार सहित ... अनन्त जीवन की हानि, अनन्त पीड़ा, ... परमेश्वर के राज्य से निकाले गए लोगों की स्थिति'' (थेयर, 70–71)। [22]दुख (यू.: *odune*) – ''नाश करने वाला, कष्ट ... पीड़ा'' (थेयर, 438); ''मानसिक पीड़ा की ... मेरा मन दुखता रहता है, रोमि. 9:2; ... विवेक का खेद ... बहुत सी टीसें'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 557)। [23]भाग (यू.: *pheuge*) – ''भागना, विलुप्त होना, अचानक ... खिसक जाना ... बचना, दूर रहना'' (रोबिन्सन 759–60)। [24]पीछा (यू.: *dioko*) – किसी व्यक्ति या वस्तु को पकड़ने के लिए तेज़ी से भागना; के पीछे भागना ... लगे

रहना; लक्ष्य तक पहुंचने के लिए तेज़ी से भागने वाले का [प्रतीकात्मक]।'' [25]धर्म (यू.: *dikaiosune*) - ''... उसकी स्थिति जो वैसा है जैसा वह होना चाहता है... परमेश्वर को स्वीकार्य स्थिति ... एकाग्रता, सद्गुण, जीवन की शुद्धता ... विचार, भावना तथा कार्य का सुधार'' (थेयर, 149)। [26]विश्वास (यू.: *pistis*) - ''किसी भी बात के सत्य होने का पूर्ण विश्वास ... परमेश्वर और ईश्वरीय बातों से मनुष्य के सज़्बन्ध का सज़्मान करने का विश्वास, सामान्यतया विश्वास से बने और इसके साथ जुड़े भरोसे और पवित्र जोश का विचार'' (थेयर, 512)। [27]प्रेम (यू.: *agape*) - ''... मोह, सदिच्छा, ... परोपकार ... मनुष्य का मनुष्य से प्रेम; [विशेषकर] मसीही लोगों का मसीहियों के साथ प्रेम जो उनके धर्म से जुड़ा और प्रोत्साहन के कारण होता है, चाहे प्रेम को महसूस किया जाए या व्यज़्त करके ... मनुष्यों का परमेश्वर के प्रति प्रेम ... परमेश्वर का मनुष्य के प्रति प्रेम ... परमेश्वर का मसीह के प्रति प्रेम ... मसीह का मनुष्यों के प्रति प्रेम'' (थेयर, 4)। [28]धीरज (यू.: *hupomone*) - ''स्थिरता, एकनिष्ठा, सहिष्णुता'' का गुण ''... ऐसे व्यज़्ति की विशेषता जो अपने विवेकशील उद्देश्य से डोलता नहीं और परीक्षा और कष्टों के बावजूद उसके विश्वास और निष्ठा से अपनी वफ़ादारी नहीं बदलता'' (थेयर, 644)। [29]कुश्ती (यू.: *agonizomai*) - ''मुकाबले में आना ... विरोधियों के साथ प्रतियोगिता करना, ... कठिनाइयों और खतरों से [जिनसे] सुसमाचार को खतरा हो... कुछ पाने के लिए, कठिन, प्रयास करना'' (थेयर, 10)। [30]निर्दोष (यू.: *anepileptos*) - ''दोषी न ठहराया जा सकता हो ... आलोचना या दोष न लगाया जा सके।''

[31]साक्षी (यू.: *martureo*) - ''यह पुष्टि करना कि किसी ने कोई चीज़ देखी या सुनी या अनुभव किया है ... गवाही से सिद्ध करना या पज़्का करना'' (थेयर, 390, 91)। [32]अभिमानी (यू.: *hupselophronein*) - ''घमण्डी, अहंकारी, अज़्खड़'' होना (रोबिन्सन, 754)। [33]एल्बर्ट एम. वैल्स, *इन्सपाइरिंग कुटेशन्स* (नैशविल्ले: थॉमस नैल्सन पब्लिशर्स, 1988), 135. [34]भलाई (यू.: *agathoergein*) - मूल शज़्द *agathos* से, जिसका अर्थ है ''अच्छे और प्रसिद्ध गुणों के लिए अलग, चरित्र ... भले कार्य, भला, लाभदायक ... लाभ, आशिषें ...'' (रोबिन्सन, 3)। [35]भले कामों में धनी (यू.: *plouteo*) - ''प्रभु'' की तरह होना ''जो सब के प्रति धनी (और दयालु) है अर्थात जो अपनी सज़्पज़ि में से सबको उदारता से देता है'' (अर्ंडट एण्ड गिंगरिक, 679)। [36]सहायता देने में तत्पर (यू.: *koinonikos*) - ''सामाजिक, होने और संगति बनाने और कायम रखने के लिए तैयार होना ... अपनी सज़्पज़ि में दूसरों को हिस्सेदार बनाने के लिए तैयार, देने वाला, उदार मन'' (थेयर, 352)। [37]रखवाली (यू.: *phulasso*) - ''निगरानी करना ... रक्षा करना ... सज़्भाल करना कि कोई ले न जाए, 1 तीमु 6:20; 2 तीमु. 1:14 ... चोरी होने या नाश होने से बचाने के लिए रक्षा करना'' (थेयर, 659-60)। [38]थाती (यू.: *paratheke*) - ''जमा (जैसे बैंक में धन), भरोसा या किसी के भरोसे कोई चीज़ भेजना ... सुसमाचार के सही ज्ञान और शुद्ध शिक्षा के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला, दृढ़ता से और ईमानदारी से रहना, और ईमानदारी से दूसरों तक पहुंचाना'' (थेयर, 482)। [39]अंगीकार (यू.: *epaggelomenoi*) - मध्यम स्वर का अर्थ है कि यह उनका अपना ही संकल्प था। इस शज़्द का अर्थ है ''... घोषणा करना ... प्रतिज्ञा करना ... यह ऐलान करना कि कोई कुछ करने वाला है ... खुले आम कहना'' (थेयर, 227)। [40]भटकना (यू.: *astocheo*) - ''निशाने से चूकना ... गलती करना, डगमगाना'' (रोबिन्सन, 103)।

[41]स्पष्ट तौर पर यह पत्री एक व्यज़्ति अर्थात तीमुथियुस के नाम लिखी गई है, परन्तु अन्त में ''तुम'' (यू.: *humon*) सज़्बन्ध कारक बहुवचन है। तीमुथियुस निश्चय ही बात को समझ गया होगा कि ''पुत्र, मैं तुज़्हें *और बहुत सी बातें लिखना* चाहता हूं।'' पौलुस चाहता था कि *पुरुषों व स्त्रियों* को पता चल जाए कि कैसे बर्ताव करना है (2:8-3:15) और वह चाहता था कि सब लोग पिता की इच्छा को पूरा करते हुए परमेश्वर के अनुग्रह को पा लें! [42]जिमी वुड, ''फर्स्ट तिमोथी'' *मैसेजस ऑफ़ द बुज़्स ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (फोर्ट वर्थ, टैज़्सस: फोर्ट वर्थ क्रिश्चियन कॉलेज, 1962), 227.